सत्याग्रह

सत्याग्रह, अहिंसा का क्रियात्मक रूप है। इसका तात्पर्य 'सत्य' या 'सत्य की शक्ति' है। महात्मा गांधी लिखते हैं "सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ 'सत्य' को पकड़े रहना या सत्यधारी होना है। सत्याग्रह में हिंसा का प्रयोग वर्जित है। मनुष्य सत्य का ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ नहीं है और इसलिए वह किसी को दण्ड देने के योग्य नहीं है। दक्षिण अफ्रिका में भारतीयों के 'अहिंसक विरोध' को भारी मताधिकार के लिए आन्दोलन करने वाली महिलाओं और अन्य लोगों के तत्कालीन 'निष्क्रिय प्रतिरोध' से पृथक करने के लिए इस शब्द का आविष्कार किया गया था।"[1]

सत्याग्रह दो शब्दों से बना है सत्य और आग्रह, 'सत्य' का अर्थ सच्चाई है और आग्रह का दृढ़ता से अवलम्बन् करना है। सत्याग्रह का तात्पर्य 'सत्य' पर दृढ़ता से स्थिर रहना है। चूँकि अहिंसक व्यक्ति आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग करता है, इसका अर्थ 'सत्य' की शक्ति है। सत्य, अपने को प्रकाशित करता है, और असत्य को पराजित करता है। यह आधारभूत सद्गुण है जिसे बुराईयों तथा असत्य के निराकरण के लिए दृढ़तापूर्वक अनुसरण करना आवश्यक है।

जब असत्य और बुराई परिव्याप्त हो जाते हैं तब सत्य अपने को प्रकट करता है। उस समय असत्य और अशुभ उसी प्रकार तिरोहित हो जाते हैं, जिस प्रकार अंधकार प्रकाश के द्वारा निरस्त हो जाते हैं। 'सत्य' यथार्थ है, 'अशुभ' सिर्फ़ आभास मात्र है। 'सत्य' सत् है, अशुभ असत्य है। असत्य या असत् कभी भी यथार्थ नहीं हो सकता है, और उसका स्थान सत्य लेता है। सत्य, अपराजेय है, वह अपरिहार्य रूप से सफल होता है।

---

१. यंग इन्डिया, भाग—१, पृष्ठ—२२२.

Scanned by TapScanner

डा० पी० टी० राजू कहते हैं, "'धर्मो जयति' सत्य सदैव विजयी होता है। यह प्रकृति का नियम है कि अन्ततोगत्वा सत्य को अवश्य विजय प्राप्त करना चाहिए, सिर्फ़ इसलिए कि वास्तविक सत्ता; हमारे चिन्तन तथा क्रिया दोनों में, अन्तिम नियामक तथ्य हैं, चाहे वे इससे कितनी भी दूर क्यों न हट जाएँ।"[1]

'सत्याग्रह' सभी बुराइयों का उपचार है। आत्मा की शक्ति या सत्य की शक्ति को बुराई के द्वारा कभी भी पराजित नहीं किया जा सकता है। यदि कष्ट सहन और प्रेम की सामान्य मात्रा से वे पराजीत नहीं होते हैं, तो उसकी अधिक मात्रा के उपयोग से उसकी बुराई अवश्य ही दूर हो जायेगी। अहिंसक व्यक्ति के द्वारा प्रेम की तीव्र शक्तियाँ बुरा कार्य करने वाले व्यक्ति के सभी अशुभ तथा पाप को अपसारित कर देती है।

सत्याग्रह असहयोग, सविनय अवज्ञा, उपवास, धरना और विरोध को अस्थायी रूप से रोक देना या हड़ताल के अहिंसक तरीकों का उपयोग करना है। अहिंसा का अनुयायी प्रेम और कष्ट सहन के साथ युद्ध आरम्भ करता है तथा विश्व में नैतिक व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास करता है। एक सत्याग्रही अशुभ के बहिष्कार के लिए सदैव सदाचार का मार्ग अपनाता है। सत्य की शक्ति का प्रयोग सभी पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बुराइयों के विरूद्ध करते हैं। सत्याग्रह की निम्नांकित विशेषताएँ हैं :

१. सत्याग्रह का स्वरूप क्रियात्मक है।
२. जब मानव-निर्मित या राज्य द्वारा बनाये गए कानून ईश्वर के नियम का विरोध करते हैं, तब सत्याग्रह उनका उल्लंघन करता है।
३. उसमें हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है।
४. सत्याग्रह का उद्देश्य सभी समय में सभी के लिए प्रेम का व्यापक प्रयोग है।
५. सत्याग्रह का लक्ष्य पारस्परिक समझौता तथा समस्याओं का समाधान है। इसमें किसी प्रकार से विरोधी का अपमान नहीं किया जाता है।
६. सत्याग्रह, सिर्फ़ एक अंग के साथ नहीं, अपितु सम्पूर्ण प्रणाली के साथ सक्रिय असहयोग है। सत्याग्रही सिर्फ़ निन्द्य सरकार की सेवा में कार्य करना अस्वीकार नहीं करता है, अपितु राज्य,

---

१. यंग इन्डिया, १२ फरवरी, १९२५, पृष्ठ—६०.

Scanned by TapScanner

न्यायालय, शिक्षण संस्था, अस्पताल, इत्यादि, के बुरे कार्यों के साथ भी असहयोग करता है। सत्याग्रही बुरे राज्य की सम्पूर्ण प्रशासन से अपने को असम्बद्ध कर लेता है।

विश्व में शान्ति लाने के लिए सत्याग्रह ही एकमात्र अस्त्र है। हिंसा और युद्ध अस्थायी लाभ की प्राप्ति कर सकते हैं, लेकिन उससे जो बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं, वे संसार में स्थायी हो जाती हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि युद्ध में सशस्त्र सैनिकों में पर्याप्त बलिदान तथा वीरता पाई जाती है। महात्मा गाँधी कहते हैं, "लेकिन किसी बुरे उद्देश्य के लिए बहादुरी और बलिदान महत्वपूर्ण शक्ति का अपव्यय है। बुरे लक्ष्य के लिये दुरूपयोग किए गए वीरता और बलिदान से हानि पहुँचती है एवं व्यक्ति का श्रेष्ठ उद्देश्यों से ध्यान भी हट जाता है।"[1]

सत्याग्रही वीर होता है। वह भी पवित्र उद्देश्य के लिए जीवन अर्पित करता है। लेकिन वह अपने हिंसक शत्रु से प्रेम करता है। वह सत्य की वेदी पर मरने के लिए तत्पर रहता है। वह अपने बलिदान और मृत्यु के द्वारा जनता को प्रेरणा देता है। एक सत्याग्रही की मृत्यु संसार में पुनर्जागरण एवं परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त है। महात्मा गाँधी कहते हैं, "मैं वीरतापूर्वक आत्म बलिदान करने वाले क्रांतिकारी के सामने सीधे खड़े होने में लज्जित नहीं हूँ, क्योंकि मैं निर्दोष व्यक्तियों के रक्त से अकलुषित रह कर अहिंसक वीरता और बलिदान, समान मात्रा में प्रस्तुत करने में समर्थ हूँ। एक अहिंसक निर्दोष मनुष्य का आत्म-बलिदान उन करोड़ मनुष्यों के बलिदान की अपेक्षा करोड़ गुणा अधिक प्रभावकारी है जो दूसरों को मारते हुए मरते हैं।"[2]

Scanned by TapScanner